# शिव का एक विराट स्वरूप

भारतवासी हर वर्ष शिवरात्रि मनाते हैं किन्तु इस सत्यता को सभी भूल चुके हैं कि यह भारत का सबसे बड़ा त्योहार है। शिवरात्रि के वास्तविक महत्त्व को समझकर इसे सार्थक रूप में मनाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिव कौन हैं और रात्रि के साथ इनका क्या सम्बन्ध है? शिव नाम परमात्मा का है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी। शिव को बिन्दु भी कहते हैं। परमात्मा इस कल्प वृक्ष का वृक्षपति है, निमित्त करण है। परमात्मा ही सब सुखों का अक्षय भण्डार है, विश्व कल्याणकारी एवम् सर्व का गति-सदगति दाता है। अतः शिव, परमात्मा का ही पर्यायवाची नाम है। भारत में शिव की प्रतिमा शिवलिंग अनेक मन्दिरों में है। इनमें मुख्य अमरनाथ, सोमनाथ, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, मुक्तेश्वर, महाकालेश्वर इत्यादि नाम प्रसिद्ध हैं। ये परमात्मा के सभी नाम किसी-न-किसी गुण अथवा दिव्य कर्त्तव्य के सूचक हैं। दक्षिण में रामेश्वर, वृन्दावन में गोपेश्वर के मन्दिर भी प्रमाणित करते हैं कि शिव ही श्रीराम व श्रीकृष्ण के परम पूज्य परमात्मा हैं।

## शिवलिंग परमात्मा की प्रतिमा है

परमात्मा ज्योति स्वरूप है इसलिये साकारी एवं आकारी देवताओं की भेंट में उन्हें निराकार कहा जाता है। परमात्मा के ज्योति बिन्दु स्वरूप का साक्षात्कार केवल दिव्य दृष्टि के द्वारा ही हो सकता है। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। परमात्मा भी निराकार ज्योतिस्वरूप है। आज बहुत से लोग लिंग शब्द का अर्थ न जानने के कारण लिंग के बारे में अश्लील कल्पना करते हैं। वास्तव में, परमात्मा शिव के ज्योति स्वरूप होने के कारण ही उनकी प्रतिमा को ज्योतिर्लिंग अथवा शिवलिंग कहा जाता है।

## शिव की मान्यता विश्व व्यापी है

अन्य धर्मों के लोग भी परमात्मा शिव की इस प्रतिमा को अपनी-अपनी रीति के अनुसार मान्यता देते हैं। मक्का में यह स्मरण चिन्ह 'संग-ए-असवद' नाम से विख्यात है। जापान के बहुत से बौद्ध धर्मावलम्बी आज भी शिवलिंग के आकार के पत्थर को सामने रखकर ध्यान लगाते हैं। ईसा ने परमात्मा को 'दिव्य ज्योति' कहा है। इटली तथा फ्रांस के गिरजा घरों में अभी तक शिवलिंग की प्रतिमा रखी है। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते हैं। शंकराचार्य ने भी शिवलिंग के मठ स्थापित किये। गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

## परमात्मा शिव के दिव्य कर्त्तव्य

शिवलिंग पर जो त्रिपुण्ड बनी होती है अथवा जो तीन पत्ते चढ़ाये जाते हैं वह परमात्मा के मुख्य तीन गुणों अथवा कर्तव्यों को सिद्ध करते हैं कि शिव त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी अथवा त्रिलोकीनाथ है। त्रिमूर्ति का अर्थ यह है कि ज्योतिबिन्दु परमात्मा शिव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के रचयिता हैं तथा इनके द्वारा क्रमशः नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना, पालना एवं कलयुगी दुनियां का विनाश कराने वाले करन करावनहार स्वामी हैं।

## शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य

शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या से एक दिन पहले मनायी जाती है। फाल्गुन मास वर्ष के अन्त का द्योतक होता है व उसकी चतुर्दशी रात्रि घोर अन्धकार की निशानी है। इस दिन शिवरात्रि मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव कल्पान्त के घोर अज्ञान रूपी रात्रि के समय, पुरानी सृष्टि के विनाश से कुछ समय पूर्व अवतरित होकर तमोप्रधानता एवं पापाचार का विनाश करके दुःख-अशान्ति को समूल नष्ट करते हैं।

ज्योति बिन्दु परमात्मा शिव कलियुग के अन्त व सतयुग के आदि के सन्धिकाल अथवा संगम के समय ब्रह्मा के तन अथवा भाग्यशाली शरीर रूपी रथ में प्रवेश करके ईश्वरीय ज्ञान देते हैं। वास्तव में यही सच्चा गीता ज्ञान है। इसे शरीरधारी देवता श्री कृष्ण ने नहीं बल्कि गोपेश्वर अव्यक्त मूर्त परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा सुनाया था। ब्रह्मा द्वारा जो मातायें व कन्यायें 'सुधाकर' परमात्मा शिव से ज्ञान सुधा का अमृत पान करती हैं वही शिव शक्तियां होती हैं। ये चैतन्य मातायें ही भारत के जन-मन को शिव द्वारा प्राप्त ज्ञान से पावन करती हैं। इस कारण से शिवरात्रि भारत का सबसे बड़ा त्योहार है।

## शिवरात्रि का ईश्वरीय सन्देश

अब परमात्मा शिव आदेश देते हैं - मेरे प्रिय भक्तो, आप जन्म-जन्मान्तर से बिना यथार्थ पहचान के मेरी जड़ प्रतिमा की पूजा, जागरण तथा उपवास करके शिवरात्रि मानते आये हो। अब अपने इस अन्तिम जन्म में महाविनाश से पूर्व मेरे ज्ञान द्वारा अज्ञान निद्रा से जागरण कर मेरे साथ मनमनाभव अर्थात् योग युक्त होकर विकारों का सच्चा उपवास करो। इस ज्ञान एवम् योग बल से महाविनाश तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करो। यही सच्चा महाव्रत अथवा शिवव्रत है।

## 71वी शिव जयन्ती

अब अति धर्म ग्लानि का समय पुनः आ चुका है और पवित्र पावन परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार तन में प्रवेश करके अपना कल्प (5000 वर्ष) पूर्व वाला रूद्र-गीता-ज्ञान सुना रहे हैं। इस शिवरात्रि को हम उनके दिव्य अवतरण की 71वीं जयन्ती मना रहे हैं। सभी मनुष्यात्माओं को सादर ईश्वरीय निमन्त्रण है कि शिवरात्रि के यथार्थ आध्यात्मिक रहस्य को जानकर शीघ्र ही आने वाली सतयुगी नई दुनिया में देवपद को प्राप्त करें।

## संस्था का परिचय

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना 1937 में स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से की थी। इसका अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान में है। विश्व के 90 से अधिक देशों में इसके 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्र चरित्र निर्माण की अनवरत सेवा कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ से यह संस्थान, गैर सरकारी संस्थान के रूप में संलग्न है तथा उसकी आर्थिक व सामाजिक समिति और यूनिसेफ का भी सलाहकार सदस्य है। इसे सन् 1981 व 1986 में संयुक्त राष्ट्र संघ का शान्ति पदक मिल चुका है तथा इसकी मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी को मानवता का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने और विश्व-शान्ति की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 1987 में अन्तर्राष्ट्रीय ''शान्तिदूत'' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। सन् 1994 में भारत सरकार ने इस के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा की पुण्य स्मृति में डाक टिकट जारी कर इसे विशेष गौरव प्रदान किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारीगण, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश, भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, राज्यपाल, गणमान्य राजनेतायें, सर्वोच्च तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश, जाने-माने वैज्ञानिक व अधिकारीगण, शिक्षाविद्, कलाकार, जगद्गुरु, महामण्डलेश्वर, धर्मगुरु तथा हर क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्ति, समय-समय पर आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेते रहे हैं। यह विश्व विद्यालय श्रेष्ठ समाज निर्माण का कार्य सर्व में आध्यात्मिक जागृति द्वारा कर रहा है।

**ओम् शान्ति** **- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स**

www.bkvarta.com